संपादकीय

बुखार का वार

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में एक्यूट इंसेफलाइटिस सिंड्रोम (एईएस) से सौ से भी ज्यादा बच्चों की मौत हो गई है। सिर्फ 17 दिनों के भीतर यह बीमारी एक ही जिले में तेजी से फैली। हालांकि, यह असाध्य बीमारी नहीं है। बड़ी संख्या में बच्चे अस्पताल से ठीक होकर भी गए हैं। मामले की गंभीरता को देखते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री, स्वास्थ्य राज्य मंत्री और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार मुजफ्फरपुर के जिला अस्पताल का दौरा कर चुके हैं।

गौरतलब है कि नेपाल की तराई में आने वाले उत्तर बिहार के मुजफ्फरपुर, पूर्वी चंपारण, पश्चिम चंपारण, शिवहर, सीतामढ़ी और वैशाली में काफी समय से, खासकर इस मौसम में इस बीमारी का प्रभाव देखा जाता रहा है। मुजफ्फरपुर में साल 1995 में यह मामला पहली बार सामने आया था। तेज बुखार के साथ इसकी शुरुआत होती है जिसके बाद यह शरीर के न्यूरोलॉजिकल सिस्टम (स्नायु तंत्र) पर असर करता है। इससे शरीर में छटपटाहट और मानसिक असंतुलन तक की स्थिति बन जाती है। यह बीमारी अमूमन मानसून के समय (जून से अक्टूबर के बीच) होती है। हालांकि, अप्रैल में भी इसे देखा गया है।

माना जाता है कि थोड़ी भी प्री-मॉनसून वर्षा होने पर मच्छर का प्रकोप शुरू हो जाता है जिससे यह बीमारी फैलती है। इस बार इसके शिकार ज्यादातर गरीब परिवारों के कुपोषित बच्चे हैं। इस बीमारी के बारे में यहां लोगों की जागरूकता भी कम है। बिहार के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे का कहना है कि एईएस को लेकर मुजफ्फरपुर और इसके आसपास के जिलों में जागरूकता अभियान चलाया गया था। हालांकि, यहां के लोग इस बात से इनकार करते हैं।

जिले के प्राइमरी हेल्थ सेंटर्स में संसाधनों की भारी कमी है। वहां के अस्पतालों में जितने मरीज पहुंच रहे हैं, उनकी तुलना में डॉक्टर और संसाधन नगण्य हैं। समस्या ने इस कारण भी इतना गंभीर रूप ले लिया। वैसे इसका टीका मौजूद है और अगर बड़े पैमाने पर टीकाकरण किया गया होता तो शायद यह नौबत न आती। असल में इस तरह की बीमारियां अचानक ही धावा बोलती हैं और फिर लंबे समय तक गायब रहती हैं, इसलिए प्रशासन तंत्र निश्चिंत हो जाता है।

कम्युनिटी हेल्थ को लेकर भारत में सरकारें वैसे भी बहुत सचेत नहीं रही हैं। अगर किसी इलाके में कोई खास समस्या है तो उसे चिह्नित कर वहां विशेष अभियान चलाया जाना चाहिए लेकिन ऐसा हो नहीं पाता है। इसी तरह स्वास्थ्य तंत्र का विस्तार भी सुस्त तरीके से हो रहा है। 2014 से ही मुजफ्फरपुर में बच्चों का एक 100 बिस्तरों वाला अस्पताल बनाने की बात कही जा रही है लेकिन वह आज तक नहीं बना। क्या इस बार की त्रासदी से कोई सबक लिया जाएगा मुजफ्फरपुर हो या गोरखपुर, जहां भी इस तरह की महामारी फैलने की आशंका हो, वहां विशेष व्यवस्था करने की जरूरत है। टीकाकरण के साथ-साथ झुग्गी-झोपड़ी बस्तियों में नियमित रूप से फॉगिंग और साफ-सफाई भी होनी चाहिए।

एअर इंडिया को बेचने की हो रही एक और कोशिश

मुंबई। देश की सरकारी विमानन कंपनी एअर इंडिया की बिक्री को लेकर नए सिरे से प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है. वित्त मंत्रालय द्वारा तैयार किए जा रहे नए प्रस्ताव में कच्चे तेल की कीमतों और विनिमय दर में उतार-चढ़ाव जैसे मुद्दों को शामिल किए जाने की भी संभावना है.

सलाहकार कंपनी ने बताई थी ये वजह

सलाहकार कंपनी ईवाई ने पिछले साल इन्हें संभावित कारणों में गिना था, जिसकी वजह से एअर इंडिया को कोई खरीदार नहीं मिला था. दरअसल, सरकार ने पिछले साल एअर इंडिया की 76 फीसदी हिस्सेदारी और प्रबंधन नियंत्रण के लिए बोलियां आमंत्रित की थीं लेकिन किसी ने बोली नहीं लगाई.इसके बाद विलय और अधिग्रहण को लेकर परामर्श देने वाली कंपनी ईवाई ने एक रिपोर्ट तैयार की थी, जिसमें बिक्री प्रक्रिया के विफल रहने के कारणों का उल्लेख किया गया था. इन कारणों में सरकार की 24 फीसदी हिस्सेदारी, अत्यधिक कर्ज, कच्चे तेल की कीमतों एवं विनिमय दर में उतार-चढ़ाव, वृहत माहौल में बदलाव एवं अन्य कारणों को गिनाया गया था.फिलहाल, वित्त मंत्रालय के नए प्रस्ताव को एअर इंडिया विशिष्ट वैकल्पिक तंत्र (AISAM) के पास भेजा जाएगा. AISAM वो समूह है जिसमें वित्त और नागर विमानन मंत्रालय से जुड़े मंत्री शामिल होते हैं.

ईवाई की रिपोर्ट पर AISAM ने की थी चर्चा

न्यूज एजेंसी पीटीआई के मुताबिक एक अधिकारी ने

बताया कि ईवाई की रिपोर्ट पर पिछले साल जून में AISAM की बैठक में चर्चा हुई थी. इसके बाद एअर इंडिया की बिक्री प्रक्रिया को टाल दिया गया था. अधिकारी ने कहा, 'हम एअर इंडिया की बिक्री को लेकर एक नया प्रस्ताव AISAM के समक्ष रखेंगे. पिछले साल एअर इंडिया के विनिवेश के विफल रहने के बाद उठाए गए मुद्दों को भी शामिल किया जाएगा. AISAM को यह तय करना होगा कि सरकार 100 फीसदी हिस्सेदारी की बिक्री करेगी या 76 फीसदी की.'

एयर इंडिया के विमान में पायलट के अपना भोजन ले जाने पर लग सकती है पाबंदी

नईदिल्ली। एयर इंडिया के विमानों में पायलट के अपना भोजन ले जाने पर पाबंदी लग सकती है। एक कैप्टन और चालक दल के एक सदस्य के बीच कहासुनी होने के मद्देनजर यह कदम उठाया जा सकता है। वरिष्ठ अधिकारियों ने यह जानकारी दी। यह घटना सोमवार को उस वक्त हुई थी, जब कैप्टन और चालक दल के सदस्य के बीच तीखी बहस हो गई। दरअसल, कैप्टन ने चालक दल के सदस्य से कथित तौर पर कहा था कि वह भोजन करने के बाद उनका टिफिन साफ कर दें। एयर इंडिया के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ''हमने सोमवार को हुई इस घटना का गंभीर संज्ञान लिया है।

व्यापारिक मुद्दों पर चर्चा के लिए ट्रंप से मुलाकात करेंगे ट्रूडो

ओटावा (आरएनएस)। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टीन ट्रूडो ने कहा है कि वह व्यापारिक मुद्दों पर चर्चा के लिए अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से गुरुवार को वॉशिंगटन में मुलाकात करेंगे। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, ट्रूडो ट्रंप के साथ होने वाली इस बैठक को व्यापारिक मुद्दों पर बातचीत के अवसर के रूप में देख रहे हैं। खासकर चीन के साथ अमेरिका के व्यापारिक टकराव और जून 28-29 को जापान के ओसाका में होने वाले

जी20 सम्मेलन से पहले उत्तरी अमेरिका मुक्त व्यापार समझौते (नाफ्टा) की पुष्टि प्रमुख मुद्दे रहेंगे। ट्रूडो ने बुधवार को मीडिया से कहा, हम आगामी और महत्वपूर्ण जी20 सम्मेलन में शामिल होने जा रहे हैं और यह हमारे लिए चीन के बारे में, व्यापार के बारे में और उन सभी वैश्विक मुद्दों पर बैठकर बात करने का एक अवसर है, जिन पर हम अगले सप्ताह जी20 में चर्चा करेंगे।

पीयूष गोयल ने कहा ई-कॉमर्स में प्रीडेटरी प्राइसिंग की इजाजत नहीं

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने थोक और किराना व्यापारियों को भरोसा दिलाया है कि ई-कॉमर्सकंपनियों को प्रतिस्पर्धा खत्म करने के मकसद से लागत से कम मूल्य पर माल बेचने की छूट नहीं दी जाएगी और ऐसा करने वालों के खिलाफ सरकार कार्रवाई करेगी। साथ ही सरकार मल्टीब्रांड रिटेल में किसी भी रूप में विदेशी कंपनियों को नहीं आने देगी।गोयल ने ई-कॉमर्स पॉलिसी पर स्टेकहोल्डर्स की राय लेने के क्रम में बुधवार को थोक और किराना व्यापारियों के साथ चर्चा के दौरान यह बात कही। उन्होंने भरोसा दिलाया कि सरकार आगामी ई-कॉमर्स पॉलिसी में छोटे व्यापारियों के हितों का ध्यान रखेगी और उनका व्यापार बढ़ाने के उपायों पर भी काम करेगी। ज्यादातर व्यापार संगठनों की ओर से आशंका जताई गई कि ई-कॉमर्स के चलते उनका व्यापार खत्म हो सकता है और हालिया बंदिशों के बावजूद ई-टेलर्स मार्केटप्लेस मॉडल की आड़ में इनवेंटरी बेस्ड व्यापार कर रहे हैं।ये कंपनियां मार्केट और कई मायनों में लागत से कम मूल्य पर माल बेच रही हैं, ताकि कॉम्पिटिशन की गुंजाइश न रहे।

गोयल ने कहा, 'प्रीडेटरी प्राइसिंग की इजाजत किसी को नहीं दी जाएगी और जो लोग ऐसा करेंगे, उनके खिलाफ सरकार सख्त कार्रवाई करेगी।'

फेड के फैसले से बढ़ी सोने-चांदी की चमक

नईदिल्ली (आरएनएस)। अमेरिका के केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व बैंक (फेड) की ओर से ब्याज दर में कटौती का संकेत दिए जाने से महंगी धातुओं के भाव में जोरदार तेजी आई है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में सोने का भाव गुरुवार को 1,395 डॉलर प्रति औंस से ज्यादा उछला। वहीं, चांदी में भी करीब दो फीसदी की तेजी दर्ज की गई। अंतर्राष्ट्रीय वायदा बाजार कॉमेक्स पर गुरुवार को अगस्त डिलीवरी सोने के अनुबंध में 36.35 डॉलर (2.69 फीसदी) की तेजी के साथ 1,385.15 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार चल रहा था जबकि इससे पहले सोने के भाव में 1,395.35 डॉलर प्रति औंस तक का उछाल आया। वहीं, चांदी के जुलाई अनुबंध में 2.11 फीसदी की तेजी के साथ 15.27 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार चल रहा था।

केडिया कमोडिटी के डायरेक्टर अजय केडिया के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी के भाव में आई जबरदस्त तेजी से भारतीय सर्राफा बाजार में गुरुवार को सोने और चांदी की चमक बढ़ जाएगी। उन्होंने बताया कि भूराजनीतिक तनाव के कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार में महंगी धातुओं के प्रति निवेश रुझान बढ़ने

से पहले से ही सोने और चांदी में तेजी बनी हुई थी मगर, बुधवार को फेड की बैठक के नतीजे आने के बाद अमेरिका में ब्याज दर में कटौती के संकेत मिलने से सोने के भाव में जबदस्त उछाल आया।

फेडरल रिजर्व बैंक ने संकेत दिया है कि इस साल वह ब्याज दर में कटौती कर सकता है। अमेरिकी केंद्रीय बैंक के रुख में बदलाव आने से महंगी धातुओं के दाम में तेजी आई है।

डीबीएस ने भारत की वृद्धि दर के अनुमान को घटाकर 6.8 प्रतिशत किया

सिंगापुर (आरएनएस)। डीबीएस बैंक ने चालू वित्त 2019-20 में भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर के अनुमान को घटाकर 6.8 प्रतिशत कर दिया है। पहले डीबीएस ने वृद्धि दर 7 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था। डीबीएस ने चुनौतीपूर्ण व्यापार परिदृश्य में निर्यात के मोर्चे दिक्कतों की वजह से वृद्धि दर के अनुमान को कम किया है। डीबीएस ने गुरुवार को भारतीय अर्थव्यवस्था पर रिपोर्ट जारी की है। डीबीएस समूह अनुसंधान में अर्थशास्त्री राधिका राव ने लिखा है कि रिजर्व बैंक ने अपने रुख को तटस्थ से नरम किया है। उन्होंने केंद्रीय बैंक के रुख में और नरमी का जिक्र करते हुए इस साल नीतिगत दर में हुई 0.75 प्रतिशत की कटौती का भी उल्लेख किया। बैंक ने कहा, हम चालू वित्त वर्ष के लिए वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर के अनुमान को सात से घटाकर 6.8 प्रतिशत कर रहे हैं।

आज का राशिफल

मेषः- आज आपकी धार्मिक प्रवृत्ति और समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इससे विरोधी परास्त होंगे और यात्रा लाभकारी रहेगी।

वृषभः- आज परिश्रम अधिक और लाभ कम हो सकता है लेकिन मेहनत करते रहें। कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। आज यात्रा न करें और वाहन सावधानी पूर्वक चलाएं।

मिथुनः- आज का दिन आपके लिए काफी लाभदायक रहेगा। अगर कोई नया रोजगार शुरू करने की सोच रहे हैं तो अवश्य करें सफलता अवश्य मिलेगी।

कर्कः- आज मेहनत के बाद सफलता अवश्य मिलेगी। मेहनत करने वालों को ही समाज में सम्मान मिलता है। कोई नया ऑर्डर अथवा कॉन्ट्रैक्ट मिलने की संभावना है, शत्रु बलहीन रहेंगे।

सिंहः- आज कारोबार सामान्य रहेगा। मनोरंजन कार्य पर खर्च हो सकता है। आज आपको प्रतिभा का लाभ मिलेगा और आपकी पहचान बनेगी। नई योजनाएं लाभ देंगी।

कन्याः- आज का दिन मिश्रित फलदायी होगा। आज कोई नया कार्य न करें, जोखिमपूर्ण निवेश करने से बचें। पूरे दिन किसी से वाद-विवाद में न पड़ें, क्रोध पर नियंत्रण रखें, अन्यथा हानि हो सकती है।

तुलाः- आज आपके पराक्रम में वृद्धि होगी, इससे आपका मनोबल बढ़ेगा। कारोबार में बेहतरी आएगी और आपके साथ काम करने वाले आपका साथ देंगे।

वृश्चिकः- आज लेन-देन के कार्यों में सावधान रहें। धन निवेश करते समय विशेष सावधानी बरतें। आज किसी को उधार न दें और न लें, क्योंकि आज दिए हुए धन को वापस आने की संभावना कम है।

धनुः- आज प्रयास अथवा स्वयं कोशिश करने से प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय में उन्नति के अवसर दिखाई दे रहे हैं। नए कार्य की शुरुआत कर सकते हैं।

मकरः- आज खर्च की अधिकता हो सकती है, व्यर्थ व्यय से बचें। किसी न किसी कारण से अनावश्यक खर्च और व्यर्थ की यात्रा भी हो सकती है।

कुंभः- आज आपकी आमदनी में बढ़ोत्तरी होगी। धन लाभ होगा, जोखिमपूर्ण निवेश करें तो लाभ अवश्य मिलेगा। परिवार का वातावरण आनंद से भरा रहेगा।

मीनः- आज आपका सितारा अनुकूल है, लाभ होगा और सफलता प्राप्त होगी। कामकाज में आ रहीं बाधाएं दूर होंगी। सभी कार्यों में मन की एकाग्रता से फायदा होगा।

ऑस्ट्रेलिया के सामने आज बंगलादेश की चुनौती

नाटिंघम (आरएनएस)। विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया को उलटफेर करने में माहिर बंगलादेश के खिलाफ गुरुवार को नाटिंघम में विश्वकप मुकाबले में सतर्क होकर खेलना होगा। बंगलादेश ने इस टूर्नामेंट में अबतक संतोषजनक प्रदर्शन करते हुए पांच मैचों में दो जीत, दो हार और एक रद्द परिणाम के साथ सात अंक हासिल करके अंक तालिका में पांचवें स्थान पर जगह बना ली है जबकि 2015 विश्वकप की विजेता टीम ऑस्ट्रेलिया भी उम्मीद के अनुरुप बेहतर खेल का प्रदर्शन कर पांच मैचों में चार जीत और एक हार के साथ अंक तालिका में दूसरे स्थान पर मौजूद है। ऑस्ट्रेलिया को अबतक एकमात्र हार भारत से मिली है। इस मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया दावेदार है लेकिन इस विश्वकप में दो बार बड़ी टीमों दक्षिण अफ्रीका और वेस्टइंडीज को हराकर चौंकाने वाली बंगलादेश को हल्के में लेना गत चैंपियन को भारी पड़ सकता है। बंगलादेश ने टूर्नामेंट के अपने पहले मुकाबले में मजूबत दक्षिण अफ्रीका को 21 रन से हराकर विश्वकप का शानदार आगाज किया था।

हम विश्व कप जरुर जीतेंगे : धवन

साउथम्पटन (आरएनएस)। अंगूठे में चोट के कारण इंग्लैंड एंड वेल्स में जारी विश्व कप से बाहर हुए भारत के सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने बुधवार को सोशल मीडिया पर एक वीडियो डाला है, जिसमें उन्होंने कहा है कि उन्हें पूरा विश्वास है कि भारत विश्व कप जीतेगा। बीसीसीआई ने बुधवार को दिन में जानकारी दी थी कि धवन चोट के कारण विश्व कप के बाकी मैचों में नहीं खेल पाएंगे। धवन ने ट्वीट किए गए वीडियो में कहा है, मैं इस बात को बताकर काफी भावुक हो रहा हूं कि मैं अब आईसीसी विश्व कप-2019 में नहीं खेल पाऊंगा। दुर्भाग्यवश, मेरा अंगूठा समय पर ठीक नहीं हो पाएगा, लेकिन जिंदगी चलती रहनी चाहिए (शो मस्ट गो ऑन)। मुझे मेरी टीम के साथियों, क्रिकेट प्रशंसक और पूरे देश से जो प्यार और समर्थन मिला उसके लिए मैं उनका आभारी हूं। धवन ने आगे कहा, टीम के खिलाड़ी शानदार खेल रहे हैं, हम अच्छा काम जारी रखेंगे और विश्व कप जीतेंगे।

धवन के विकल्प के तौर पर युवा ऋषभ पंत को टीम में शामिल किया गया है। आईसीसी ने भी पंत के नाम को मंजूरी दे दी है। इससे पहले दिन में बीसीसीआई ने धवन के विश्व कप के बाकी मैचों में उपलब्ध न होने की जानकारी दी थी। उनके हाथ के अंगूठे में चोट है और वह टूर्नामेंट तक ठीक होने की स्थिति में नहीं हैं।

मैकरोनी सलाद बनाने की विधि...

मैकरोनी सलाद रेसिपी एक बहुत ही हेल्दी व्यंजन है जिसे आप सुबह के नाश्ते के लिए तैयार कर सकती है। यह मूल रूप से बहुत ही कम वसा वाली रेसिपी है जिसे आप अपने बच्चे के लंच बॉक्स में पैक कर सकती है। यह खाने में बेहद स्वादिष्ट है और साथ ही कई पोषक तत्वों और खनिजों का भरपूर मिश्रण भी हैं। आइए जानते है मैकरोनी सलाद बनाने की विधि के बारे में।

सामग्री -

पास्ता मैकरोनी (उबले हुए) - 2 कप
बीन (उबले हुए) - 1/2 कप
गाजर (उबले हुए) - 1/2 कप
खीरा (कटे हुए) - 1
बादाम (टोस्टेड) - 1/4 कप
धनिया पत्ते (कटे हुए) - 1 चम्मच
लो फैट दही - 200 ग्राम

विधि -

मैकरोनी सलाद बनाने के लिए सबसे पहले आप एक पैन लें और उसके बाद उसमें पानी डालें।अब, पास्ता मैकरोनी डालें और इसे पकाएं।फिर, अलग बर्तन लें और बीन और गाजर को पकाएं।इसके बाद एक अलग बाउल लें और इसमें पका हुआ पास्ता मैकरोनी डालें।भुना हुआ बादाम, बीन, गाजर और दही को इसमें डालें।फिर, बाउल में खीरा को डालें।सभी सामग्री ठीक तरह से मिला लें।इसे धनिया पत्तों से गार्निश कर एक प्लैटर में सर्व करें।आपका मैकरोनी सलाद बनकर तैयार है।

शब्द सामर्थ्य-1

बाएं से दाएं
1. भारत के वर्तमान वित्तमंत्री 6. हित, उपकार 7. असमान, पूर्वोत्तर का एक राज्य 8. किसी वस्तु व्यक्ति आदि के पहचान सूचक संबोधन का शब्द, संज्ञा 10. शवस्थल पर बनाया गया मकान, योग का अंतिम अंग, तपस्या 13. इंकार करना, ना कहना 14. पिता, क्लर्क, सम्मानीय व्यक्ति 15. आय पर लगने वाला टैक्स, इंकमटैक्स 16. प्रतिद्वंद्वी, प्रेमिका का दूसरा प्रेमी 17. परंपरा, रीति, रिवाज 20. रुप से युक्त, चिह्न, लक्षण, नाटक, एक साहित्यिक अलंकार 23. लोग, प्रजा 25. नामी, नामवर, प्रसिद्ध 27. संसार का स्वामी, बादशाह, सम्राट, ईश्वर 28. फैलाना, खिंचाव पैदा करना।

ऊपर से नीचे
1. मारना, प्रहार करना, आघात करना 2. मिथ्याअभिमान, आडंबर 3. विपत्ति, आफत 4. मालदार, धनवान, अमीर 5. ज्ञान प्राप्त करना, अनुमान लगाना, कल्पना करना 7. हक 9. विवश, लाचार 11. मानकंद, नापने का पैमाना 12. अपमानित और तिरस्कृत 17. संतान उत्पन्न करने की क्रिया, जन्म देने की क्रिया 18. लंबे कपड़े का गट्ठा, पशुओं को रखने की जगह 19. जलयान, वायुयान, जलपोत 21. आश्रय, सहारा 22. थोड़ा, जरा, तनिक 24. जुर्म, गुनाह 26. बाघ की तरह का धारीदार हिंसक एवं विशाल पशु।

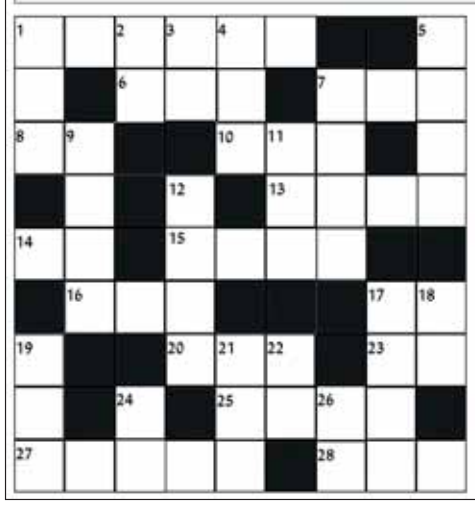

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 100 का हल

भू	कं	प	■	फा	य	दा	■	स
प	■	ल	ला	ट	■	य	ती	म
ति	ल	क	■	क	न	क	■	झ
■	क्ष्म	■	■	■	रे	■	■	■
ग	ण	क	■	सं	श	य	■	सौ
ह	■	या	च	क	■	म	न्न	त
रा	क्ष	स	■	र	क्ष	क	■	न
■	त्रि	■	■	■	मि	■	■	■
शा	य	री	■	का	त	र	■	गो

सू-दोकू-1

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक रख सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.100 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6